Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

महात्मा गाँधी एवं गिज्जुभाई के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता

विनोद कुमार
शोधकर्त्ता, एम0ए0 शिक्षाशास्त्र हण्डिया
पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज हण्डिया, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश

डॉ0 विजय बहादुर सिंह
शोध–निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग, हण्डिया
पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज हण्डिया, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश

Article Info
Volume 4 Issue 2
Page Number : 177-181

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 02 March 2021
Published : 15 March 2021

सारांश– शिक्षा एक ऐसा सशक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आचार, विचार व्यवहार में परिवर्तन करता है। शिक्षा बन्द समाजों की समाप्ति कर नये तथा प्रगतिशील समाजों का निर्माण करती है? शिक्षा सीखने तथा सीखाने की प्रक्रिया है जो मनुष्य के जीवनपर्यन्त तक चलता है। शिक्षा अनवरत सतत् लगातार एक प्रक्रिया है। गाँधी जी एक प्रयोगवादी और व्यवहारिक व्यक्ति थे जिन्होंने दक्षिणी अफ्रीका और भारत में शिक्षा उपकरणों के प्रयोग पर सिद्धान्तों को व्यवहार में प्रयुक्त किया। गाँधी जी भारत में स्वतन्त्रता को पूर्व प्रचलित शिक्षा प्रणाली के दोषों से अवगत थे और उसे सुधारने के लिए उन्होंने प्रयत्न भी किया है। गिज्जुभाई एक मात्र भारतीय बाल शिक्षा विद् थे। उनके न पहले ही न तो कोई बाल शिक्षा विद नजर आता है और ना तो उसके पश्चात ही। बालकों के बारे में, इतनी गहराई से, इतनी पीड़ा और तर्क बुद्धि से सोचने वाले सिर्फ वही थे। गिज्जुभाई ने अपने छोटे से आयुष्य काल में गुजरात की शिक्षा के क्षेत्र में जो उल्लेखनीय कार्य किये थे उसके उल्लेख में शब्द कम पड़ जाते हैं कारण गिज्जुभाई एक व्यावहारिक स्वप्न दृष्ट थे। बालकों की शिक्षा को उन्हों मातृ शिक्षा के रूप एवं संक्षिप्त अर्थ में अंगीकार नहीं किया था, अपितु बाल शिक्षा को उन्होंने सामाजिक पुर्नरचना के माध्यम के रूप में ग्रहण करना शिक्षकों को सिखाया था। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा वर्तमान समय में राष्ट्र के लिए अमूल्य धरोहर है जिसके द्वारा बालकों में स्वावलम्बन तथा आत्मनिर्भर, जागृत करेगी। हस्तकौशल के माध्यम से बालक व्यवसायिक समस्याओं से दूर होगा। जिसमें आज की बढ़ती हुयी बेरोजगारी पर अंकुश लग सकता है। जिससे प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि होगी और देश आपके स्वरूप से सबल होगा और प्रगति करेगा। प्रस्तुत अध्ययन गिज्जुभाई बधेका के शैक्षिक विचारों का संकलन कर उनके गहन अध्ययन एवं भावी शोध हेतु इस क्षेत्र में दिशा एवं गति प्रदान करेगा।

मुख्य शब्द– महात्मा गाँधी, गिज्जुभाई बधेका, शिक्षा, दर्शन, विचार, तुलना, प्रासंगिकता।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भूमिका–विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो संसार के प्रत्येक जीव में पायी जाती है। जिसमें मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है क्योंकि समाज में ही रहकर उसके मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र नहीं है, वरन् जीवन–यापन की प्रक्रिया है।

''शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र नहीं है, वरन् जीवन–यापन की प्रक्रिया है।'' **जान डीवी**

शिक्षा विकास का वह क्रम है, जिसमें व्यक्ति शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था की ओर बढ़ता है और इस क्रम में वह प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुसार अभिक्षमता ग्रहण करता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो प्राणी की जन्मजात शक्तियों, गुणों और अभिरूचियों का इस प्रकार विकास करती है कि जिससे ये उसको सामाजिक प्रर्यावरण में व्यवस्थित करने में सहायता देती है, साथ ही उसके व्यक्तित्व का विकास करती है तथा उसके सम्पूर्ण व्यवहार, आचार–विचार, व्यक्तित्व में ऐसा परिवर्तन करती है जो उसके अपने स्वयं के लिए तथा समाज राष्ट्र तथा देश के लिए लाभदायक हों।

अर्थात हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है अर्थात व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक के जो कुछ सीखता और अनुभव करता है वह सब शिक्षा का व्यापक अर्थ दर्शाता है व्यक्ति के सीखने को और अनुभव करने का परिणाम यह होता है कि वह शैनः–शैनः विभिन्न प्रकार से अपने भौगोलिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पर्यावरण से अपने आपको समायोजित करता है। जीवन ही वास्तव में शिक्षित करता है। व्यक्ति अपने व्यवसाय, पारिवारिक जीवन, मित्रता, विवाह, पितृत्व, मनोरंजन, यात्रा आदि के द्वारा शिक्षित किया जाता है।

शिक्षा एक ऐसा सशक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आचार, विचार व्यवहार में परिवर्तन करता है। शिक्षा बन्द समाजों की समाप्ति कर नये तथा प्रगतिशील समाजों का निर्माण करती है? शिक्षा सीखने तथा सीखाने की प्रक्रिया है जो मनुष्य के जीवनपर्यन्त तक चलता है। शिक्षा अनवरत सतत् लगातार एक प्रक्रिया है।

गाँधी जी एक प्रयोगवादी और व्यवहारिक व्यक्ति थे जिन्होंने दक्षिणी अफ्रीका और भारत में शिक्षा उपकरणों के प्रयोग पर सिद्धान्तों को व्यवहार में प्रयुक्त किया। गाँधी जी भारत में स्वतन्त्रता को पूर्व प्रचलित शिक्षा प्रणाली के दोषों से अवगत थे और उसे सुधारने के लिए उन्होंने प्रयत्न भी किया है। गाँधी जी ने 'बुनियादी शिक्षा' के नाम पर आज देश में जिन शैक्षिक–रीति– नीतियों का प्रतिपादन किया जा रहा है। वे वस्तुतः अच्छी प्रणाली और शिक्षण–विधि से सम्बन्ध रखती है और किसी भी अच्छे कहे जाने वाले विद्यालय के लिए अनिवार्य है। गाँधी जी के शैक्षिक विचार धारा सम्पूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी है। वर्तमान समय में जो भी सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, चारित्रिक, संकट पनपा हुआ है उसे गाँधी जी के शैक्षिक दर्शन से सुधारा एवं सवांरा जा सकता है। यही कारण है कि गॉधी दर्शन के अनुसार शिक्षण विधि प्रासंगिक है जिसमें सहजतापूर्वक एवं सरलता से किसी भी पाठ्य विषय को गहराई एवं सुगमता तथा सरल बनाया जा सकता है।

गिज्जुभाई एक मात्र भारतीय बाल शिक्षा विद् थे। उनके न पहले ही न तो कोई बाल शिक्षा विद नजर आता है और ना तो उसके पश्चात ही। बालकों के बारे में, इतनी गहराई से, इतनी पीड़ा और तर्क बुद्धि से सोचने वाले सिर्फ वही थे। गिज्जुभाई ने अपने छोटे से आयुष्य काल में गुजरात की शिक्षा के क्षेत्र में जो उल्लेखनीय कार्य किये थे उसके उल्लेख में शब्द कम पड़ जाते हैं कारण गिज्जुभाई एक व्यावहारिक स्वप्न दृष्ट थे। बालकों की शिक्षा को उन्हों मातृ शिक्षा के रूप एवं संक्षिप्त अर्थ में अंगीकार नहीं किया था, अपितु बाल शिक्षा को उन्होंने सामाजिक पुर्नरचना के माध्यम के रूप में ग्रहण करना शिक्षकों को सिखाया था। इसी

भाँति माण्टेसरी के दार्शनिक विचारों तथा कार्यक्रमों को उन्होंने यहाँ की सांस्कृतिक परम्परा के द्वारा किस प्रकार से सम्बन्ध किया था तथा उनके बोधक उपकरणों एव बाल मानस शास्त्र पर कैसी–कैसी और कहाँ–कहाँ उल्लेखनीय एवं विचारणीय है।

कोई डरे नहीं कोई डरावे नहीं सभी के साथ सहयोग पूर्ण कार्यों में रचा बसा रहे, यदि ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है तो इसके बिना ना तो राम राज्य सम्भव है और ना ही लोकतांत्रिक समाजवाद। ये विशेष रूप से डा0 मेरिया माण्टेसरी एवं कुछ अर्थों में फ्रोबेल के शिक्षा दर्शन से प्रभावित थे। 1916 से 1936 के बीच जीवन का प्रत्येक क्षण गिज्जुभाई बालकों से बातचीत, शैक्षिक भ्रमण शान्ति की क्रीड़ा, इन्द्रिय के लिए खेल का निर्माण करने, साधना करने, हाथ के काम, संगीत, नाटक तथा रचनात्मक कार्यों के आयोजन एवं प्रयोजन में बिताये। इन्होंने शिक्षा से सम्बन्धित 20 ग्रन्थों की रचना के साथ–साथ दो सौ बाल पोथियों तथा तीन सौ से भी अधिक कहानियाँ लिखकर जूटे गुजरात के बालकों को स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित किया। गिज्जुभाई के शिशु शिक्षा सम्बन्धी विचर इनकी कई पुस्तकों में लिपिबद्ध है। इन पुस्तकों में विशेष महत्व की पुस्तके, दिवास्वप्न, बाल शिक्षण, प्राथमिक शाला में शिक्षक प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षा, प्राथमिक शाला में चिट्ठी वाचन, मा–बापों ने, हालतां चालतां, ऐसे हो शिक्षक आदि है। दिवास्वप्न, कहानी विधि में लिखी गयी है जिसमें काल्पनिक चरित्रों मास्टर लक्ष्मी शंकर के माध्यम से जो स्वयं गिज्जुभाई ने कहा है कि ''सच्ची शिक्षा वही है जिससे मानव सर्वांगींड, सम्पूर्ण तथा सन्तुलित विकास हो सके। इनके अनुसार सबसे सुनहरा एवं महत्वपूर्ण काल शेखावत या शिशु काल इतना नाजुक होता है कि जो संस्कार इस में पड़ जाते हैं वो जीवन भर स्थायी बन जाते हैं क्योंकि इसे सम्पूर्ण काल का पहला मजबूत स्तम्भ माना गया है। नींव मजबूत नहीं हुई तो इमारत कभी मजबूत नहीं होगी। इन्होंने शरीर और मन का सामंजस्य सन्तुलित बताया क्योंकि शरीर और मन, एक दूसरे से सम्बन्धित है। इनका मानना है कि शरीर स्वरूप है तो उसका प्रभाव मन पर अवश्य पड़ेगा क्योंकि स्वस्थ शरीर से स्वस्थ मन का विकास होता है। इसके अलावा भी कई महत्वपूर्ण विषय है जैसे कि बालक में शिक्षा के द्वारा सामाजिक गुण जैसे–अहिंसा, सत्य, सहयोग, त्याग, स्नेह, दया, करूणा, परोपकार, आदि मानवीय गुणों का विकास होना चाहिये।

समस्या कथन–

'महात्मा गाँधी एवं गिज्जुभाई के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता'

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन कार्य के उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. महात्मा गाँधी के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
2. गिज्जुभाई के शिक्षा सम्बन्धी योगदान की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
3. वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में गाँधी शिक्षा दर्शन एवं गिज्जुभाई शिक्षा दर्शन की उपयोगिता का अध्ययन करना।

वर्तमान शैक्षिक परिस्थितियों में महात्मा गाँधी एवं गिज्जूभाई बधेका के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता–

प्रस्तुत अध्ययन ''महात्मा गाँधी एवं गिज्जुभाई बधेका के शैक्षिक विचारों एवं शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों की वर्तमान शैक्षिक परिस्थितियों में प्रासंगिकता'' पर केन्द्रित है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण एवं विशषज्ञों के परामर्श आदि के आधार पर इनकी शैक्षिक दृष्टि से उपयोगिता को निम्नांकित बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा सकता है –

इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालक का सर्वांगीण विकास, आत्मनिर्भर, स्वालम्बन तथा सहयोग की भावना कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों का विकास शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है।

गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा वर्तमान समय में राष्ट्र के लिए अमूल्य धरोहर है जिसके द्वारा बालकों में स्वावलम्बन तथा आत्मनिर्भर, जागृत करेगी। हस्तकौशल के माध्यम से बालक व्यवसायिक समस्याओं से दूर होगा। जिसमें आज की बढ़ती हुयी बेरोजगारी पर अंकुश लग सकता है। जिससे प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि होगी और देश आपके स्वरूप से सबल होगा और प्रगति करेगा।

बच्चों के साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार, स्वच्छ तथा सून्दर वातावरण एवं आकर्षक पर्यावरण तथा सरकार द्वारा चलायी जा रही तमाम योजनाओं के सही क्रियान्वयन से प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्याओं को रोका जा सकता है।

कुछ बालक विशिष्ट होते हैं इन विशिष्ट बालकों की शिक्षा समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है। बच्चों की क्षमता रूचि, योग्यता एवं आवश्यकतानुसार शिक्षण की व्यवस्था करके अपराधी बालक, समस्यात्मक बालक, कुसमायोजित बालकों की समस्याओं को दूर करे उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर गाँधी जी एवं गिज्जुभाई के अनछुए पहलुओं पर अध्ययन हेतु अध्ययनकर्त्ता को प्रोत्साहित करेगा।

प्रस्तुत अध्ययन गाँधी जी के शैक्षिक विचारधारा के विभिन्न अंगों पर जैसे शिक्षा की अवधारणा, शिक्षा का पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, अनुशासन, शिक्षक शिक्षार्थी तथा अनुशासन पर गहन अध्ययन करने हेतु भावी अध्ययनकर्त्ताओं का मार्ग प्रशस्त करेगा तथा अनेक अध्ययनकर्त्ता इस क्षेत्र में शोध हेतु आगे आयेंगे।

प्रस्तुत अध्ययन गिज्जुभाई बधेका के शैक्षिक विचारों का संकलन कर उनके गहन अध्ययन एवं भावी शोध हेतु इस क्षेत्र में दिशा एवं गति प्रदान करेगा।

विषय के अन्य देशों पर जैसे विकसित और विकासशील देशों में गाँधी जी एवं गिज्जुभाई की शैक्षिक विचारधाराओं के अध्ययर पर मौलिक एवं नवीन शोध अनुसंधान की सम्भावना बढ़ेगी।

प्रस्तुत अध्ययन गाँधी जी प्राथमिक शिक्षा के समय बच्चों में प्रेम सद्भाव मातृभावना सामूहिक एकता जैसे सामाजिक गुणों का विकास करके भविष्य में आने वाली तमाम समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन गाँधी जी एवं गिज्जुभाई के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अन्य शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचारों से तुलनात्मक एवं समालोचनात्मक अध्ययन हेतु भावी अध्ययनकर्त्ताओं को प्रोत्साहित कर सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गाँधी, महात्मा (1963). सत्य ही ईश्वर है, अहमाबाद, नवजीवन प्रभात मण्डल।
2. गाँधी, महात्मा (1967). सत्याग्रह, वाराणसी, गाँधी स्मारक निधि
3. गुप्ता, निर्मला 'प्राथमिक शिक्षा के विशेष संदर्भ में गिज्जुभाई के शैक्षिक विचारों के सामर्थ्य का अध्ययन करना' परिप्रेक्ष्य, न्यूपा वर्ष–15, अप्रैल, 2008।
4. प्रभाकर, विष्णु (1958). गाँधीः समय, समाज और संस्कृति, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. प्रकाश, सूरज (1932). दिवास्वप्न शिक्षा सम्बन्धी प्रयोग की कहानी, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।

6. बधेका, गिज्जुभाई (2007). दिवास्वप्न, जयपुर, गीतांजलि प्रकाशन।
7. बधेका, गिज्जुभाई (2005). सूर्ख ब्राह्मण, नई दिल्ली प्रकाशन संस्थान।
8. वर्मा, ताराचन्द (1969). गाँधी और शिक्षा, जयपुर, चिन्मय प्रकाशन।
9. सिंह, अमर ज्योति (1968). महात्मा गाँधी और भारत, नई दिल्ली साहित्य मण्डल।
10. सेठी, जयदेव (1979). गाँधी की प्रासंगिकता, नई दिल्ली, प्रकाशन।
11. सेठी, जयदेव (1979). गाँधी टुडे, गाजियाबाद, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0।